B/III
L-27
MIH

बहिष्कार एवं स्वदेशी आन्दोलन

(i) बहिष्कार आन्दोलन :

- ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार जैसे- धोबी वर्ग द्वारा विदेशी कपड़ो को धोने से इंकार करना, महिलाओं के द्वारा विदेशों में बने आभूषण का बहिष्कार करना इत्यादि।
- सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार जैसे- शैक्षणिक संस्थाएँ, अदालत, प्रशासनिक कार्यालय इत्यादि।
- बहिष्कार के सन्दर्भ में ही अरविंद घोष ने निष्क्रिय प्रतिरोध की बात कही थी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

स्वदेशी -

उद्योग :-

- आन्दोलन के दौरान उत्साह पूर्वक उद्योगों में निवेश किए गए जैसे- कागज, साबुन, माचिस इत्यादि उद्योगों में निवेश
- अनुभव एवं पैसे की कमी के कारण अधिकांशतः उद्योग बंद हो गए

Note :- • P C Ray - बंगाल केमिकल्स फैक्ट्री

• स्वदेश वस्तु प्रचारिणी सभा - तिलक द्वारा स्थापित

Scanned by CamScanner

स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कम्पनी - चिदम्बरम पिल्लै

कला :

• कला के क्षेत्र में विशेषकर चित्रकला के क्षेत्र में अजन्ता एवं एलोरा, नोवेल चित्र कला से प्रेरणा ली गई। अवनीन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बोस इत्यादि।

• रविन्द्रनाथ टैगोर ने कलकत्ता कला सम्प्रदाय की स्थापना की।

राजनीति :-

एक तरफ कांग्रेस के मंच से स्वशासन एवं स्वराज की मांग की गई। दूसरी तरफ विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था जैसे प्राकृतिक आपदा के दौरान किस प्रकार सहयोग करना है, पंचों के माध्यम से विवादों का समाधान, कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण इत्यादि।
जैसे - साधना, व्रती, स्वदेश बांधव या बारिसाल समिति (संस्थापक - अश्विनी कुमार दत्त)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

शिक्षा एवं भाषा :-

1906 में बंगाल में स्वदेशी शिक्षा के विकास के लिए राष्ट्रीय शिक्षा परिषद और 1906 में ही बंगाल नेशनल कालेज की स्थापना की गई।

Scanned by CamScanner

- कृष्ण कुमार मित्र ने सरकारी स्कूल से निष्कासित छात्रों के लिए एंटी सर्कुलर सोसायटी बनाई।
- आन्दोलन के दौरान तकनीकी शिक्षा के लिए छात्रों को जापान भेजने के लिए भी एक समिति बनाई गई।
- आन्दोलन के दौरान स्वदेशी भाषा में शिक्षा के साथ-साथ अखबारों एवं साहित्यों के प्रकाशन पर भी बल दिया गया। गीतों की रचना की गई जैसे रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा आमार सोनार बांग्ला नामक गीत की रचना की गई।
- आन्दोलन के दौरान बंकिम चन्द्र के द्वारा लिखित वंदे मातरम नामक गीत भी अधिक लोकप्रिय हुआ।
- बंग्ला के साथ-साथ तेलुगु, तमिल, उर्दू, हिन्दी मराठी, पंजाबी इत्यादि भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया गया।

स्वदेशी आन्दोलन की प्रकृति या विशेषताएँ

- 1857 के विद्रोह के पश्चात पहला जन आन्दोलन जिसका प्रसार अखिल भारतीय स्तर पर दिया जैसे बंगाल के साथ-साथ मद्रास, पंजाब, दिल्ली, आन्ध्र प्रदेश इत्यादि

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

क्षेत्रों में इसका प्रभाव दिखा।

- हालांकि इस आन्दोलन का प्रसार मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में रहा जैसे कलकत्ता, ढाका, पटना, दिल्ली, पूना, मद्रास, लाहौर इत्यादि क्षेत्रों में।

- आन्दोलन को मुख्यतः मध्यवर्ग ने नेतृत्व प्रदान किया। शहरों में आम लोगों की व्यापक भागीदारी दिखी। विशेषतौर पर छात्रों, मजदूरों एवं महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

नोट :- मुस्लिम समुदाय की सीमित भागीदारी थी। आन्दोलन के दौरान दिसम्बर 1906 में ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना की गई तथा आन्दोलन के दौरान साम्प्रदायिक दंगे भी हुए।

लक्ष्य :- आन्दोलन का प्रारम्भिक लक्ष्य था बंगाल विभाजन का विरोध करना। इसी के साथ स्वशासन एवं आत्मनिर्भरता जैसे लक्ष्य भी इसमें जुड़ गए।

- आन्दोलन को लोकतांत्रिक तरीके से संचालित किया गया, प्रारम्भ में प्रार्थना, अपील जैसे तरीकों को अपनाया गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

लेकिन अगस्त 1905 से अपेक्षाकृत उग्र तरीके अपनाए गए जैसे- बहिष्कार, हड़ताल, धरना प्रदर्शन, विरोध इत्यादि और आन्दोलन पर इसका सर्वाधिक प्रभाव दिखा।

• आन्दोलन के साथ-साथ युवाओं ने क्रान्तिकारी या हिंसात्मक तरीके को अपनाया और आन्दोलन के कमजोर पड़ते ही क्रान्तिकारी गतिविधियों का महत्व बढ़ा।

• आन्दोलन एक निश्चित उद्देश्य और कार्यक्रम को लेकर संचालित किया गया। इस दृष्टिकोण से इसकी प्रकृति संगठित प्रतीत होती है। हालांकि इसे संगठित रखने में कांग्रेसी नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी न कि कांग्रेस संगठन की।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

*बहिष्कार एवं स्वदेशी आन्दोलन की संक्षेप में चर्चा :-

• आन्दोलन के दौरान नेताओं ने संघर्ष, त्याग और निडरता का परिचय दिया। राजनीति अब तीन दिनों की बैठक से बाहर निकल कर सड़को पर उतर आयी।

• आन्दोलन के दौरान, राष्ट्रीय चेतना को

कुछ नए प्रतीकों से जोड़ा गया जैसे राष्ट्र को माँ कहकर संबोधित किया जाने लगा, धार्मिक त्यौहारों एवं ऐतिहासिक पुरुषों का भी उपयोग राष्ट्रीय चेतना को उभारने के लिए किया गया। इसी प्रकार स्वदेशी भाषा, कला इत्यादि को जोड़ने के लिए कहा गया। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि राष्ट्रीय चेतना को सांस्कृतिक तत्वों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाने लगा।

- सरकार की दमनकारी नीति, फूट डालो राज करो की नीति, संगठनात्मक कमजोरी, नरम एवं गरम दल के बीच मतभेद, नेतृत्व का संकट, जन आन्दोलन की सीमाएँ (जैसे जन आन्दोलन को लम्बे समय तक नहीं चलाया जा सकता है) इत्यादि कारणों से 1907 तक आते-आते कमजोर हुआ लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के दृष्टिकोण से मील का पत्थर साबित हुआ (लक्ष्य, सामाजिक आधार, क्षेत्रीय आधार, नेतृत्व, संघर्ष का तरीका, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद इत्यादि)

Note :-

बंगाल से बाहर अखिल भारतीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में तिलक की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

आन्ध्रप्रदेश - हरि सर्वोत्तम राव, कृष्णा राव

दिल्ली - सैयद हैदर रजा

1908 - तिलक को 6 वर्षों के लिए जेल की सजा। उन्हें बर्मा के माण्डले जेल में भेजा गया।

- बंगाल से 9 नेताओं को निष्कासित किया गया और पंजाब से लाजपत राय एवं अजीत सिंह को भी निष्कासित किया गया।

- 1909 में अरविंद घोष भी पांडिचेरी चले गए।

- 1911 में बंगाल विभाजन को रद्द किया गया तथा कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा की गई।

- 1912 में बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग किया गया।

प्र० स्वदेशी आन्दोलन की विशेषताओं को संक्षेप में बताएँ?

प्रश्न भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वदेशी आन्दोलन के योगदान को बताएं?

प्रश्न- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वदेशी आन्दोलन को मील का पत्थर या ऐतिहासिक मोड़ क्यों कहा जाता है?

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

नरम एवं गरम दल के मध्य अंतर एवं मतभेद तथा कांग्रेस का 1907 में विभाजन –

- नरम एवं गरमदलीय नेताओं की सामाजिक शैक्षणिक पृष्ठभूमि में अंतर देख सकते हैं। अधिकांशतः नरमदलीय नेताओं की शिक्षा ब्रिटेन में हुई थी और ब्रिटिश संस्कृति का उन पर अधिक प्रभाव था वहीं अधिकांशतः गरम दलीय नेताओं की शिक्षा भारत में हुई थी तथा उनपर भारतीय संस्कृति का अधिक प्रभाव था।

- दोनों का उद्देश्य स्वशासन था हालांकि नरम दलीय नेताओं के लिए स्वशासन से आशय था— शासन में भारतीयों की अधिकाधिक भागीदारी। वही गरमदलीय नेतृत्व भागीदारी के साथ-साथ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर राजनीतिक स्वतंत्रता की बात भी करते थे।

- भारतीय सरकार और नौकरशाही की आलोचना दोनों गुटों के द्वारा की जाती थी हालांकि नरमदलीय नेतृत्व ब्रिटेन की सरकार में आस्था रखते थे लेकिन गरमदलीय नेतृत्व ब्रिटिश सरकार के भी आलोचक थे और भारत के विकास के लिए स्वयं के प्रयासों को अधिक महत्व देते थे।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES

Scanned by CamScanner

- दोनों की कार्य शैली में भी व्यापक अन्तर देख सकते हैं एक गुट प्रार्थना और अपील में विश्वास करता था वहीं दूसरा गुट स्वदेशी बहिष्कार, धरना, हड़ताल इत्यादि में।

- दोनों के सामाजिक आधार भी अलग-अलग थे। नरमदल का आधार उच्च मध्यवर्ग में अधिक था वहीं गरम का आधार निम्न मध्यवर्ग, निम्नवर्ग एवं युवाओं में अधिक था।

- नरमदलीय नेतृत्व ने राजनीतिक, आर्थिक मुद्दों को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा वहीं गरमदल के नेतृत्व ने इसके साथ साथ सांस्कृतिक मुद्दों को भी जोड़ा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

- बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन को नरमदलीय बंगाल तक एवं ब्रिटिश वस्तुओं के बिस्तार तक सीमित रखना चाहते थे, वहीं गरमदलीय सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार चाहते थे और अखिल भारतीय स्तर पर आन्दोलन का प्रसार चाहते थे। (ऐसा ही हुआ)
- 1906 में कांग्रेस का अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित किया गया। गरमदलीय चाहते थे कि अध्यक्ष तिलक या लाजपत राय को

Scanned by CamScanner

बनाया जाए लेकिन नरमदलीय नेताओं ने दादाभाई नौरोजी का नाम प्रस्तावित किया उनके सम्मान में गरमदलीय पीछे हट गए। हालाँकि गरमदल के दबाव में चार प्रस्ताव पारित किए गए। जो इस प्रकार है
⇓
स्वराज या स्वशासन
स्वदेशी
बहिष्कार
राष्ट्रीय शिक्षा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner